उत्तराखण्ड सरकार
प्रेस सूचना ब्यूरो
(सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग)
सचिवालय परिसर, सुभाष रोड, देहरादून
E-mail : infodirector.uk@gmail.com
Website : www.uttarainformation.gov.in

हरिद्वार/देहरादून 03 नवम्बर, 2018 (सू.ब्यूरो) **प्रेस नोट–04(11/10)**

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार में आयोजित हो रहे ''ज्ञान कुम्भ 2018'' के प्रथम सत्र के अंतर्गत "Government's Initiatives towards improving Quality of higher education in India" से संबंधित विषय के अंतर्गत विभिन्न राज्यों से आए महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता नागालैंड के राज्यपाल श्री पद्मनाभ बालकृष्ण आचार्य ने की।

नागालैंड के राज्यपाल श्री आचार्य ने कहा कि हमें अपने राज्यों की शिक्षा पद्यतियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा पद्धति अपने राज्य की आवश्यकताओं, जरूरतों के अनुरूप होनी चाहिए। गरीब और वंचित लोगों को समर्थ बनाना ही हमारी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। भारत को सशक्त व समृद्ध बनाने के लिए हमें अपनी शिक्षण पद्धतियों को रिफॉर्म करने की आवश्यकता है।

उप मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश डॉ दिनेश शर्मा ने कहा कि शिक्षा में सुधार के लिए हमें शिक्षकों के मानसिक तनाव को कम करने की कोशिश करनी चाहिए, तभी अध्ययन अध्यापन सही प्रकार से हो सकेगा। हमारी शिक्षा व्यवस्था आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार होनी चाहिए। उच्च शिक्षा मंत्री मणिपुर श्री तोकचोम राधेश्याम ने कहा कि हमें शिक्षा को मात्र नौकरी पाने का साधन नहीं समझना चाहिए। हमें शिक्षा में शोध केंद्रित माहौल बनाना होगा। इसके लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

झारखंड की उच्च शिक्षा मंत्री डॉ मीरा यादव ने कहा कि शिक्षार्थियों के सम्पूर्ण विकास के लिए कौशल विकास के साथ साथ संस्कारिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। उच्च शिक्षा मंत्री मेघालय श्री लहकमेन रिंबुई ने कहा कि हमें शिक्षार्थियों की वीकनेस के बजाय उनकी स्ट्रेंथ को पहचानना चाहिए। उसे ढूंढ कर प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षा का आधुनिकीकरण करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर स्वामी रामदेव ने कहा कि हमारी शिक्षा समावेशी होनी चाहिए, संवेदनाओं से युक्त होनी चाहिए। शिक्षा हमारे संस्कारों में, हमारे व्यक्तित्व में दिखनी चाहिए।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग

देहरादून 03 नवम्बर, 2018 (सू.ब्यूरो) प्रेस नोट–03(11/09)

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने ऋषिकेश स्थित एम्स के प्रथम दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को उपाधियां वितरित की। उन्होंने दीक्षांत उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, उनके अध्यापकों व अभिभावकों को बधाई देते हुए कहा कि जैसे सीमाओं पर देश की रक्षा के लिए सेना के जवान समर्पित हैं उसी प्रकार बीमारी से लड़ने में युवा चिकित्सकों को समर्पित होकर काम करने की जरूरत है। कार्यक्रम में कुल 162 विद्यार्थियों को उपाधियां दी गई जिनमें 01 पीएचडी, 44 एमबीबीएस, 117 बीएससी नर्सिंग शामिल है।

राष्ट्रपति ने कहा कि उत्तराखण्ड सदैव शिक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से आकर्षण का केंद्र रहा है। आज भी ऋषिकेश दुनिया में योग व अध्यात्म के केंद्र के तौर पर प्रसिद्ध है। गांधीजी ने कभी इस क्षेत्र की जलवायु से प्रभावित होकर कहा था कि ना जाने क्यों लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए यूरोप जाते हैं। अगर हम इस क्षेत्र का सही विकास करें तो पूरी दुनिया से लोग उत्तराखण्ड आएंगे। यहां नेचर टूरिज्म व एडवेंचर टूरिज्म के साथ ही मेडिकल टूरिज्म का केंद्र बनने की भी पर्याप्त क्षमता है। रामायण की कथा में उत्तराखण्ड में संजीवनी बूटी का जिक्र आता है। यहां औषधीय गुणों से सम्पन्न वनस्पतियों की सम्पदा है। योग, आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी आदि पद्धतियों को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ विकसित करते हुए यहां हॉलिस्टिक हीलिंग की विश्व स्तर की सुविधाओं की सम्भावना है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारत में चिकित्सा व अनुसंधान के क्षेत्र में एम्स की भूमिका महत्वपूर्ण है। एम्स को केवल चिकित्सा सेवा में ही नहीं बल्कि चिकित्सा अनुसंधान में भी आगे बढ़ना है। एम्स ऋषिकेश में अनेक सुपर स्पेशलिस्ट सेवाएं दी जा रही हैं। उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य संबंधी स्थानीय समस्याओं पर अनुसंधान करें। एम्स ऋषिकेश गांव, ब्लॉक व जिला स्तर पर कार्यरत चिकित्सकों की कैपिसिटी बिल्डिंग में योगदान कर सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से टेली मेडिसिन व टेली सर्जरी को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस प्रकार आधुनिक तकनीक का उपयोग करके सुदूर क्षेत्रों की जनता तक एम्स की क्षमताओं का लाभ पहुंचाया जा सकता है। राष्ट्रपति ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि उत्तराखण्ड में टेली मेडिसिन, टेली रेडियोलॉजी, ई–रक्तकोष जैसी सुविधाएं प्रारम्भ की गई हैं। आयुष्मान भारत में उत्तराखण्ड में सौ प्रतिशत कवरेज का प्राविधान है।

राष्ट्रपति ने कहा कि एक स्टैंडर्ड प्रोटोकोल बनाया जाए जिसके अनुसार हर डाक्टर ईलाज करे। इससे अनावश्यक जांच से बचा जा सकेगा। मरीज को ट्रीटमेंट के साथ ही चिकित्सों के व्यवहार से भी लाभ मिलता है। मरीज केवल एक मेडिकल पीस नहीं होता है बल्कि बीमारी से ग्रस्त परेशान मनोदशा वाला इंसान होता है जिसे मानसिक सहारे की जरूरत होती है। आपकी भूमिका केवल एक चिकित्सक की नहीं बल्कि एक हीलर की भी होती है। मरीजों का विश्वास जीतने की आवश्यकता है।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जेपी नड्डा ने कहा कि मेडिकल की उपाधि प्राप्त करने वाले युवा आज के बाद एक नई जिम्मेदारी की शुरूआत कर रहे है। उन्हें लोगों के दुख दर्द दूर करने व समाज की सेवा का व्रत लेना होगा। चिकित्सक का व्यवसाय मानवता से जुडा है इसलिए समाज को इनसे बडी उम्मीदें रहती है।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि एम्स ऋषिकेश का प्रथम दीक्षांत समारोह ऐतिहासिक अवसर है। उन्होंने कहा कि एम्स ऋषिकेश प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना का बेहतर उदाहरण है। यह मेडिकल शिक्षा का भी बेहतर संस्थान है। आज यहा 4 हजार ओपीडी तथा 900 इनडोर बेड की सुविधा है। उन्होंने कहा कि एम्स ऋषिकेश ने आयुष्मान भारत योजना से अपने को जोड़ा है।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा ने कहा कि भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास के प्रति विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पिछले 4 साल में 16 एम्स स्थापित किये गये है। मेडिकल कालेजों मे फेकेल्टी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये केम्पस इन्टरव्यू की व्यवस्था की गई है। एम्स में भी यह व्यवस्था की गई है। फेकल्टी के चयन आदि में पारदर्शिता अपनाई जा रही है।

इस अवसर पर राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य, मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, विधानसभ अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल, सांसद डॉ.रमेश पोखरियाल निशंक, श्रीमती मालाराज लक्ष्मी शाह, मुख्य सचिव श्री उत्पल कुमार सिंह, एम्स निदेशक प्रो.रवि कांत सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग

देहरादून 03 नवम्बर, 2018 (सू.ब्यूरो) प्रेस नोट–02(11/08)

शनिवार को हरिद्वार के पतंजलि विद्यापीठ में उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा उच्चतर शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन ''ज्ञान कुम्भ'' का शुभारम्भ हुआ। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने इसका विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर उत्तराखण्ड की राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य, मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, नागालैण्ड के राज्पाल श्री पी.बी.आचार्य, उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत, स्वामी रामदेव, उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री दिनेश शर्मा सहित विभिन्न राज्यों के शिक्षा मंत्री, विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षाविद व विद्यार्थी उपस्थित थे।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने अपने सम्बोधन में कहा कि देश में सदियों से धार्मिक कुम्भ की परम्परा रही है। हरिद्वार, कुम्भ के आयोजन की पावन भूमि रही है। उन्होंने उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित ज्ञान कुम्भ को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक पहल बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही व्यक्ति, परिवार, समाज व देश की प्रगति का आधार होती है। देश के संविधान में शिक्षा की जिम्मेदारी, केंद्र व राज्य दोनों को दी गई है। ज्ञान कुम्भ द्वारा उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए केंद्र व राज्यों में नया समन्वय स्थापित हो रहा है, उत्तराखण्ड ने इसका उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि ज्ञान कुम्भ में विभिन्न सत्रों में सार्थक व उपयोगी विमर्श होगा जिससे उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए सहायता मिलेगी।

राष्ट्रपति ने कहा कि गुणात्मक शिक्षा में शिक्षकों व शिक्षण संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हर बच्चे में कोई न कोई प्रतिभा अवश्य होती है, उस प्रतिभा को तलाशने व निखारने का काम शिक्षकों व शिक्षण संस्थानों का होता है। यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी बच्चा गरीबी या किसी भी कारण से शिक्षा के अवसर से वंचित न रहे। ज्ञान के साथ संस्कारों के बीज भी रोपित करना शिक्षकों की जिम्मेवारी है। परंतु यह काम वही शिक्षक कर सकते हैं जिनमें स्वयं त्याग व संवेदनशीलता हो।

राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे देश में आदर्श शिक्षकों के अनेक प्रेरक उदाहरण हैं। शिक्षा व नैतिकता के बल पर राष्ट्र निर्माण में आचार्य चाणक्य, सभी शिक्षकों के लिए अनुकरणीय है। राष्ट्रपति ने बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के अध्यापक डॉ. अम्बेडकर के साथ ही डॉ. एस. राधाकृष्णन, महामना मदन मोहन मालवीय व डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन से सीख लेने की बात कही।

राज्यपाल श्रीमती बेबीरानी मौर्य ने कहा कि कुम्भ नगरी हरिद्वार में ज्ञान कुम्भ का आयोजन निश्चित रूप से राष्ट्रीय शैक्षिक परिदृश्य के लिए हितकारी होगा। इस ज्ञानकुम्भ के आयोजन का मुख्य उद्देश्य आधुनिक चुनौतियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उच्च शिक्षा के स्तर में सुधार लाना है। ज्ञानकुम्भ से प्राप्त ज्ञान रूपी अमृत, देश को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

राज्यपाल ने कहा कि भारतवर्ष जिन महान मूल्यों और संस्कारों के लिए जाना जाता है, आज शिक्षा में उनका समावेश करने की आवश्यकता है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा एवं शिक्षण कार्य को पवित्र कार्य माना जाता रहा है। भारत में गुरू की महत्ता माँ–बाप और ईश्वर से बढ़कर बताई गई है। सैकड़ों वर्ष पूर्व भी भारत में नालन्दा–तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय थे, जहाँ देश विदेश से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। जब विश्व के तमाम देश अज्ञानता की निद्रा में सोये थे तब भारत में ज्ञान का सूर्य पूरी आभा के साथ चमक रहा था।

आज तकनीक का समय है। प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। इसलिए विश्वविद्यालयों को अपनी पाठ्यसामग्री को भी लगातार अपडेट करते रहने की जरूरत है ताकि इनकी उपयोगिता सिद्ध हो सके। शिक्षण विधियों में सरलता व गुणवत्ता लाने के लिए स्मार्ट और वर्चुअल क्लासेस, ई–लाईब्रेरी आदि की व्यवस्था आज की आवश्यकताएँ बन गयी हैं।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता का एक मापदण्ड उसका रोजगारपरक होना भी है। इसके साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दिया जाना जरूरी है। पारम्परिक पाठ्यक्रमों के साथ कम्यूनिकेशन स्किल और पर्सनैलिटी डेवलपमेंट को भी पाठ्यवस्तु में स्थान दिया जाना चाहिए। संस्कृत भाषा पर भी विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए हम सब को मिलकर प्रयास करने होंगे।

मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने कहा कि ज्ञानकुम्भ का आयोजन उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासक पहल है। इसमें होने वाले वैचारिक मंथन से जो अमृत निकलेगा वह देश की उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने में महत्वपूर्ण साबित होगा। शिक्षा एक ऐसा धन होता है जिसे न तो चुराया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। शिक्षा के माध्यम से अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान मे देश में 903 विश्वविद्यालय हैं और 39 हजार कॉलेज हैं। आज आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की है। उच्च शिक्षा में शोध को बढ़ावा देना होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने निकटवर्ती क्षेत्रों के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए आगे आएं। स्थानीय संसाधनों का प्रयोग कर वहां की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं की पूर्ति किस प्रकार की जा सकती है, इस पर विश्वविद्यालय शोध करें। इससे एक बड़ा आर्थिक व सामाजिक बदलाव आ सकता है। कुछ संस्थान यह काम कर भी रहे है। देहरादून का आईआईपी का उदाहरण हमारे सामने है। उत्तराखण्ड में चीड़ को हानिकारक बताया जाता है। परंतु आईआईपी ने चीड़ से तारपीन का तेल, डीजल, बिजली उत्पादित करने का शोध किया है। इससे चीड़ हमारे लिए वरदान बन सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आई.टी. पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है। प्रधानमंत्री जी ने भी कहा है कि आईटी + आईटी = आईटी (इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी + इंडियन टेक्नोलोजी = इंडिया टूमारो)। आईटी से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार किया जा सकता है। दूरस्थ क्षेत्रों की शिक्षण संस्थानों को आईटी से जोड़ने की आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने राष्ट्रपति का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि ज्ञान कुम्भ में विभिन्न राज्यों के शिक्षा मंत्री, विश्वविद्यालयों के कुलपति, 500 डिग्री कॉलेजों के प्राचार्य, 350 शोध छात्र, दो हजार मेधावी छात्र सहित 10 हजार शिक्षाविद प्रतिभाग कर रहे हैं। उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए आयोजित इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में कुल सात तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जा रहा है।

देहरादून 03 नवम्बर, 2018 (सू.ब्यूरो) **प्रेस नोट–01(11/07)**

जौलीग्राण्ट एयरपोर्ट पर शनिवार को राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के आगमन पर राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य, मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, मुख्य सचिव श्री उत्पल कुमार सिंह और पुलिस महानिदेशक श्री अनिल कुमार रतूडी द्वारा स्वागत किया गया।

इस अवसर पर डिप्टी कमांडेंट आई.एम.ए. जे.एस.नेहरा, डी.एम. देहरादून श्री एसए मुरूगेशन, एस.एस.पी. निवेदिता कुकरेती आदि उपस्थित थे।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग